PG Sem II
CC-7 (Psychopathology)

Topic –
Delusional Disorder और Paranoid Disorder

यह एक ऐसा मानसिक रोग है जिसकी चर्चा हिपोक्रेटस द्वारा भी की गयी थी। उस समय उन्होंने स्थिर-व्यामोह का अर्थ 'पागलपन' बतलाया था। आधुनिक समय में स्थिर व्यामोह का प्रयोग इस अर्थ में नहीं होता है। 19वीं शताब्दी में मनोरोगविज्ञानियों एवं वैज्ञानिक मनोविज्ञान के विशेषज्ञों ने इसका प्रयोग एक खास अर्थ में किया जिसमें रोगियों में व्यामोह की प्रधानता होती थी। व्यामोह का अर्थ गलत विश्वास से होता है। आधुनिक समय में विशेषज्ञों के अनुसार स्थिर-व्यामोह से तात्पर्य एक ऐसे मानसिक रोग से होता है जिसमें रोगी एक जटिल व्यामोह को विकसित कर लेता है परन्तु इसमें किसी प्रकार का विभ्रम, भाषा तथा क्रियाकलापों में गड़बड़ी तथा स्थिति भ्रान्ति आदि का कोई लक्षण नहीं होता है।

अतः स्पष्ट है कि इस रोग में रोगी में व्यामोह तंत्र इतना जटिल होता है कि उससे उसके व्यवहार में असमानता तथा कुसमायोजन स्पष्ट रूप से दिखते हैं। सुव्यवस्थित एवं स्थिर व्यामोह के अलावा इस तरह के रोगियों में और कोई लक्षण असामान्य नहीं होते हैं। DSM-IV(TR) में इस रोग का नाम व्यामोह विकृति (delusional disorder) रखा गया है।

कुहलि, स्कोहेल्ला एवं एलाम के शब्दों में इस प्रकार परिभाषित किया गया :—

"व्यामोह विकृति, व्यामोही तंत्र में मौलिक असामान्यता होती है। वास्तव में कुछ व्यामोही तंत्र की ही सिर्फ असामान्यता होती है और सभी पहलुओं में व्यक्तित्व सामान्य दीखता है।"

स्थिर व्यामोह में व्यक्ति किसी-न-किसी प्रकार के सुव्यवस्थित एवं स्थिर व्यामोह विकसित कर लेता है और इतना ही नहीं, इसके पक्ष में कुछ मनगढ़न्त तर्क भी देता है, व्यामोह को छोड़कर रोगी अन्य दृष्टिकोणों से ठीक नजर आता है। ऐसे रोगी में मनोविदलता के रोगियों के तरह विभ्रम नहीं होता है।

DSM-III-R द्वारा 1987 में मानसिक रोगों में वर्गीकरण प्रस्तुत करने के पहले स्थिर-आमोह में दो तरह के मनोविकृतियों को शामिल किया जाता था - स्थिर-आमोह तथा स्थिर-आमोही अवस्था। स्थिर-आमोह में रोगी में मुख्यतः धीरे-धीरे उत्पीड़न का आमोह तथा महानता या ईर्ष्या का आमोह विकसित होता है जो काफी क्रमबद्ध एवं तार्किक होता है। इन आमोहों को छोड़कर रोगी का व्यक्तित्व में कोई विभ्रम तथा गंभीर चिन्तन के लक्षण नहीं होते हैं। स्थिर-आमोह अवस्था में जो आमोह होते हैं वे क्षणिक होते हैं उनमें न तो क्रमबद्धता होता है और न उनमें तार्किक तत्व ही पाये जाते हैं। इस तरह की अवस्था प्रायः उस समय उत्पन्न होती है जब रोगी में मानसिक तनाव का स्तर बढ़ जाता है।

DSM-IV (TR) में इन दोनों तरह के रोगों को एक ही शीर्षक अर्थात् आमोही विकृति में रखा गया है। परन्तु चूँकि स्थिर-आमोह तुलनात्मक रूप से अधिक लोकप्रिय है। DSM-IV (TR) में आमोही विकृति की पहचाने के लिए कुछ कसौटियाँ निम्न है :-

1. व्यक्ति में एक या एक से अधिक आमोह जो सामान्य जीवन की परिस्थितियों से संबद्ध होते हैं।

2. आमोही मनोविदलता के लक्षण व्यक्ति में नहीं। श्रवण विभ्रम या दृष्टि विभ्रम, यदि हो, तो वह प्रबल नहीं हो। आमोही विषयों से सम्बद्ध स्पर्श या घ्राण विभ्रम उपस्थित हो सकते हैं।

3. आमोह के प्रभाव के अलावा व्यक्ति का व्यवहार किसी भी तरह से अनोखा नहीं दिखता है।

4. अगर आमोह के साथ-ही-साथ, व्यक्ति के मनोदशा में कुछ उथल-पुथल यदि आती भी हो, तो इसकी अवधि आमोही अवधि की तुलना में काफी कम होता है।

5. व्यक्ति के व्यवहार में क्षुब्धता का कारण कोई सामान्य मेडिकल अवस्था या किसी औषध के लेने से उत्पन्न दैहिक प्रभाव से न हो।

अतः स्पष्ट है कि व्यामोह विकृति में सिर्फ व्यामोह उत्पन्न होने की ही असामान्यता होती है अन्यथा व्यक्ति का व्यवहार बिलकुल सामान्य होता है।